

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०९/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपने मूलस्वरूप को देखें... सभी अपने मूलस्वरूप का स्पष्टता से अनुभव करें... सभी देखें आपका सत्य स्वरूप.. आप आत्मा चैतन्य सितारा.. जिससे लाइट निकल रही है... सभी अपने लाइट को स्पष्टता से अनुभव करें... देखिए, आपका ही यह सत्य स्वरूप है... गहराई से इसे अनुभव करें...

जितना-जितना आप आपके सत्य स्वरूप का, मूलस्वरूप का अनुभव करते जाएंगे, उतना-उतना आपको आप आत्मा के अंदर परिवर्तन दिखता जाएगा। परिवर्तन किसे होना है? क्या शरीर का परिवर्तन करना है या आत्मा का परिवर्तन करना है? जिसका परिवर्तन करना है, वह सदा उपस्थित रहना चाहिए।

देह भान में आकर आपने अगर कर्म-व्यवहार किया, तो आपके सभी कर्मेन्द्रियों के अंदर देह भान के ही संस्कार आएंगे और वही संस्कार कड़े हो जाएंगे; और आप आत्मा ने अगर हर व्यवहार कॉन्ससियसली आप आत्मा की लाइट को ऑन रखते हुए किया, तो सभी कर्मेन्द्रियों के अंदर आत्मिक व्यवहार करने के संस्कार आते जाएंगे, सभी कर्मेन्द्रियों के अंदर आत्मिक व्यवहार करने के संस्कार धारणा में आते जाएंगे।

आपको अगर इस मायावी बंधनों से मुक्त होना है, आप आत्मा के कल्याण अर्थ और परिवर्तन अर्थ, तो आपको, आप आत्मा को कॉन्ससियसली हर कर्म में आपकी लाइट को उपस्थित रखना होगा। जितना-जितना आप आत्मा की लाइट हर कर्म में उपस्थित रहती जाएगी, उतना-उतना आपके सभी मायावी कर्म-संबंध, कर्म-बंधन टूटते जाएंगे।

अब तक कल्याण की यात्रा शुरू नहीं हुई है। कल्याण की यात्रा तो बहुत आगे है। सबसे पहले आत्मा को देह सहित देह के सभी संबंधों को बुद्धि से भूलना होगा। आप आत्मा स्वतंत्र हो और आप जो कर्म करेंगे, वही आपका हिसाब-किताब बनता जाएगा। फिर उस हिसाब-किताब में आपके अभी के परिवार वाले, संबंधी उस हिसाब-किताब को बांटने के लिए या उस हिसाब-किताब को झेलने के लिए आपके साथ खड़े नहीं रहेंगे, क्योंकि हर किसी का अपना-अपना हिसाब-किताब होगा। तो हर कोई ध्यान दें — आप जो करोगे, वो सिर्फ आपको ही भुगतना होगा। भल आपको अंत में यह भी लगेगा कि “हमने तो अच्छाई के लिए ही इनके प्रति यह कर्म किया।” पर आपको क्या उन्होंने परमिशन दी थी कि उनके अच्छाई के लिए आप कुछ उनके तरफ से करो? यह तो आपका निर्णय था कि यह करेंगे तो ये सामने वाले के लिए अच्छा होगा।

इसलिए संगमयुग में किसी के भी किन्हीं भी बातों में नहीं जाना, यह परमात्मा की सबसे पहली शिक्षा है। क्योंकि किसी के किन्हीं बातों में जा-जाकर आप आपका कार्मिक अकाउंट का खाता बढ़ाते हो, जो कि संगमयुग में आपको सब कुछ सबसे पहले चुनू करना है और आप संगमयुग में किसी के किन्हीं बातों में जाकर आपका और नया खाता बना रहे हो।

संगमयुग शुरू होते ही आत्माओं को सबसे पहले क्या करना चाहिए? सबसे पहले आत्माओं को उनके रचयिता, उनके पास पहुंचकर अपने कल्याण की शिक्षाएं, कल्याण की आज्ञाएं लेनी चाहिए; और इस संगमयुग में स्वयं परमात्मा, जो अनंत यूनिवर्स के रचयिता आए हैं, तो इस संगमयुग में हर किसी को सबसे पहले परमात्मा के पास पहुंच जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा मौका कभी नहीं मिलता। इस संगमयुग में सभी आत्माओं को और सभी अस्तित्वों को अपने कल्याण अर्थ, अपने परिवर्तन अर्थ परमात्मा के पास पहुंचना सिर्फ जरूरी ही नहीं, बल्कि उसके बिना कोई रास्ता नहीं है, आपके कल्याण और आपके परिवर्तन के लिए। परमात्मा आए हैं सभी को, हर एक-एक अस्तित्व को ठीक करने। परमात्मा आए हैं सभी को कल्याण का, परिवर्तन का मार्गदर्शन करने, सभी के उद्धार का मार्गदर्शन करने। तो इस यूनिवर्स में सभी

आत्माओं को परमात्मा के पास पहुंचना जरूरी है, ताकि वह अपना अनंत कल्पों के लिए स्वयं का, सदा का परिवर्तन कर सकेंगे।

हर संगमयुग में उस यूनिवर्स के जो आत्माओं के रचयिता शिवबाबा होते हैं, वह संगम में आकर आत्माओं को एक कल्प के लिए पढ़ाई पढ़ाते हैं, एक कल्प के लिए आत्माओं के परिवर्तन का मार्गदर्शन करते हैं, एक कल्प के लिए आत्माओं को उनके परिवर्तन और कल्याण के लिए ताकत भरते हैं। पर इस संगम में परमात्मा आए हैं, जो सभी का, सभी माना सारे अनंत यूनिवर्स का, अनंत यूनिवर्स के चलाने वाले शिवबाबाओं का, अनंत यूनिवर्स के शक्तियों का — कल्याण करने के लिए परमात्मा आए हैं। उसमें इस यूनिवर्स के आत्माओं को सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जो वो परमात्मा से भी शिक्षा उठा सकते हैं। परमात्मा से श्रीमत लेकर, उस श्रीमत पर चलकर अपना अनंत कल्पों का कल्याण कर सकते हैं, अपना सदा का परिवर्तन कर सकते हैं। यह कभी किसी संगमयुग में नहीं होता है। परमात्मा आए ही हैं सभी यूनिवर्स को ठीक करने। यह जो यूनिवर्स है, वह अति के भी अति, के भी अति, के भी अति तमोप्रधान हो चुका था। परमात्मा ने उसे ठीक किया है — परमात्मा की ताकत से, शिक्षाओं से, शक्ति से। तो इस यूनिवर्स के सभी अस्तित्वों को, सभी आत्माओं को, सभी शक्तियों को जागृत होना पड़ेगा अपने कल्याण के लिए, अपने परिवर्तन के लिए।

सभी आत्माएं, आप संसार में ६३ जन्म संसार तो किया ही है, बहुत भोगा है, पर अभी आपको इस संगमयुग में संसार का त्याग करना ही होगा, अगर आप आपका संपूर्ण कल्याण और संपूर्ण परिवर्तन करना चाहते हो तो। संसार कभी भी खत्म नहीं होने वाला। आप खत्म हो सकते हो, पर संसार तो चलता ही आया है, चलता ही रहेगा। आप सभी आत्माओं के ऊपर है कि आपको क्या चॉइस करना है — संसार या आपका आत्म-कल्याण, आत्म-परिवर्तन, जिससे आपके अगले कल्प के जन्म श्रेष्ठ होंगे। आपको जो पसंद है, आप वहां पर ही रहोगे। आप आत्माओं की सच्ची दिल जहां हैं, वहां ही आप रहोगे। अगर किसी आत्मा की दिल सच में सच्ची है उसके आत्म-कल्याण के लिए और आत्म-परिवर्तन के लिए, तो वह

आत्मा अवश्य संसार का त्याग करके परमात्मा के पास पहुंच ही जाएगी, क्योंकि कल्याण की यात्रा आपके घर में बैठकर नहीं हो सकती। ब्रह्मा बाप ने भी संसार को त्यागा, उसको भी गृहस्थ आश्रम छोड़ना पड़ा। आत्मा का परिवर्तन और कल्याण संसार में रहकर कभी भी नहीं हो सकता, यह एक अटल सत्य है। इसको कोई कभी भी मिटा नहीं सकता।

अगर आप आत्माएं सोचती होंगी, “संसार में रह के हम तीव्र पुरुषार्थ करेंगे, हम ८ घंटा, १० घंटा तपस्या करेंगे, हम १६ घंटा तपस्या करेंगे, हम ज्वालामुखी भट्टी करेंगे” — यह सब व्यर्थ है। बिना परमात्मा के, इस संगमयुग में किसी का भी कल्याण और परिवर्तन कदापि नहीं हो सकता। इस संगम में आपको आपके परिवर्तन के लिए परमात्मा के पास पहुंचना ही होगा।

बच्चे रोज स्कूल में जाते हैं, टीचर पढ़ाई पढ़ाते हैं। पर अगर बच्चे स्कूल में ही नहीं गए, तो उनको कौन पढ़ाएगा? कहां से उनको पढ़ाई की डिग्री मिलेगी? यह संगमयुग आत्म-कल्याण और आत्म-परिवर्तन की पढ़ाई का युग है। यह आत्म-कल्याण की पाठशाला है। यह आत्म-परिवर्तन का स्कूल है। जब तक इस स्कूल में आप, आप आत्मा को भर्ती नहीं करेंगे, तब तक आपको आपके अंदर परिवर्तन के लिए, कल्याण के लिए वह शिक्षाएं नहीं मिलेगी। भल आप दूर बैठकर कल्याण का, परिवर्तन का ज्ञान सुनोगे, विधियां सुनोगे, अलग-अलग तपस्या, अभ्यास, पुरुषार्थ सुनोगे, पर परिवर्तन के लिए ताकत परमात्मा से ही मिलती है — वह भी सम्मुख। उस ताकत को अपने अंदर लेने के लिए परमात्मा की यूनिवर्सिटी में आप आत्मा को भर्ती होना पड़ेगा। घर पर बैठकर संसार करते आध्यात्मिक यात्रा कभी भी नहीं हो सकती। भल आपको लगेगा कि हम इस संस्था से जुड़े हैं, हम आध्यात्मिक हैं, हमने खानपान में यह-यह धारणा की है, हमारी यह-यह धारणाएं हैं, हम इन-इन धारणाओं को पालन करते हैं — पर यह सब कुछ है बाहरी, ऊपरी धारणाएं। परिवर्तन तो आत्मा को होना है, ना कि देह को, ना ही देह से संबंधित संसार को। आत्मा के परिवर्तन के लिए सुप्रीम सर्जन परमात्मा ही चाहिए, जो इस संगम में आए हैं।

आप घर पर बैठकर कितनी भी शिक्षाओं को पालन करो, कितनी भी श्रीमत को पालन करने की कोशिश करो, कितना भी कड़ा पुरुषार्थ करो। पर जब तक सम्मुख परमात्मा से आपको कोई श्रीमत, शिक्षा या आज्ञा नहीं मिलती और उस अनुसार आप आपको उस प्रकार से नहीं चलाते, तब तक आपके अंदर किसी भी रूप से परिवर्तन नहीं होगा।

परिवर्तन और कल्याण बहुत गहरी बातें हैं। आप उसे हल्के में नहीं लेना कि “हां, हो जाएगा, क्या बड़ी बात है। हम घर पर बैठकर पुरुषार्थ तो करते ही हैं। हम घर पर बैठकर मौन का अभ्यास करते ही हैं। हम घर पर बैठकर अमृतवेला, नुमाशाम करते ही हैं।” बिना परमात्मा-गुरु के आपका कल्याण नहीं हो सकता। साकार में परमात्मा के पास पहुंचकर, उसकी श्रीमत पर चलकर, उसकी आज्ञाओं पर चलकर, उसकी शिक्षाओं को अपने अंदर धारण कर कर, आप आत्मा को आपका परिवर्तन करना होगा। फिर वह हुई आत्मा की कल्याण की यात्रा की शुरुआत। जैसे-जैसे एक-एक श्रीमत परमात्मा की पालन करते जाओगे, एक-एक आज्ञा को पालन करते जाओगे, एक-एक शिक्षा को अपने अंदर धारणा में धारण करते जाओगे, फिर आपको आपके अंदर परिवर्तन दिखता जाएगा। घर पर बैठकर संसार करते, आपको कहां से श्रीमत मिलेगी हर कर्म की, कहां से आपको हर कर्म के लिए आज्ञा मिलेगी? कहां से आपको यह शिक्षा मिलेगी कि हर कर्म कैसे करना है? फिर वह संकल्प, विचार, भाव, वृत्ति, दृष्टि, बोल, कर्मों तक की यात्रा हो। आप घर पर बैठकर, कैसे आपको हर बात की परमात्मा से शिक्षा मिलेगी? थोड़ा खुद ही सोचना। क्या सच में घर पर बैठकर संसार करते आत्मा का परिवर्तन हो जाएगा? आत्मा की कल्याण की यात्रा हो पाएगी?

संसार में भी लोग कहते हैं, अगर आपको आपकी जीवन सुधारनी है तो आपको गुरु करना चाहिए। यहां पर तो आपको, आप आत्मा की अनंत कल्प के लिए, सदा के परिवर्तन के लिए आपकी आत्मा की जीवन को बनाना है। तो आप आत्मा को परमात्मा सतगुरु के रूप में जो इस यूनिवर्स में आए हैं, उनके पास पहुंचना ही होगा। बिना परमात्मा के श्रीमत से, आज्ञा से, शिक्षा से कभी भी किसी का

उद्धार नहीं हो सकता। भल इस जन्म में संसार में कोई अरबपति हो, कोई करोड़पति हो, कोई दुनिया में टॉप में अमीर भी क्यों ना हो, पर उनको भी उनके अगले जन्मों का, अगर उनके आत्मा का जीवन बनाना है, तो उनको भी परमात्मा के पास पहुंचना ही होगा।

आप अमीर होंगे इस एक जन्म के। पर आपने आपका अगले जन्म का, आप आत्मा ने आपके कल्याण के लिए अगर कुछ सोचा ही नहीं, तो सिर्फ इस एक जन्म में आप आपकी अमीरी को भोग लोगे। पर अगले कल्प का आपसे सब कुछ छूट जाएगा।

इस संसार में कोई भी अस्तित्व हो — लौकिक रूप से अमीर हो या गरीब हो — हर किसी को अपने कल्याण और परिवर्तन के लिए परमात्मा के पास पहुंचना ही होगा। परमात्मा की श्रीमत पर चलना होगा। एक-एक श्रीमत मिलने से आप आत्मा का कितना बड़ा परिवर्तन होता है, यह आप नहीं जानते। इसलिए अपने कल्याण अर्थ और परिवर्तन अर्थ परमात्मा से श्रीमत प्राप्त करने के लिए स्वयं को परमात्मा के पास पहुंचाना ही होगा। आपको घर में, संसार में बैठकर ज्ञान की बातें मिलेगी, थोड़ी-बहुत समझ मिलेगी। आप कुछ बातों को घर पर चलते फॉलो भी करेंगे, आप आपके व्यवहार में भी लाएंगे। पर परमनेंट धारणा में उतारना, परमनेंट परिवर्तन करना — यह परमात्मा की ताकत से ही पॉसिबल है।

आप जो भी घर पर बैठकर पुरुषार्थ करोगे, तपस्या करोगे, उससे आपको संसार में रहकर आपकी स्थिति ठीक रहेगी। वह पुरुषार्थ, वह तपस्या जो आप संसार में करते हो, वह सिर्फ आपकी रोज की स्थिति को ठीक करने में ही काम में लगती है। इससे आपका कोई अगले कल्प का, अगले जन्मों का कुछ जमा नहीं हो रहा। कोई भी भ्रम में ना रहे कि “हम तो इतने-इतने सालों से ज्ञान में, इस आध्यात्मिक मार्ग पर चल रहे हैं। हम सभी धारणाओं पर चल रहे हैं। हम नियमित रूप से अमृतवेला, नुमाशाम सब कर रहे हैं। हमारा तो कल्याण होना निश्चित है। हम तो सतयुग में निश्चित जाएंगे।” कोई भी इस भ्रम में कभी भी नहीं रहना। ब्रह्मा बाप को भी सब छोड़ना पड़ा। इतना बड़ा एगजांपल आप सबके सामने रखा है। फिर भी आप ऐसे कैसे आपके मायावी विचारों में चल रहे हो कि “हमारा तो बेड़ा पार हो गया। हमें तो बाबा मिल

गया।” कहां मिला है? कौन सा बाबा मिला है? हर एक आत्मा प्रैक्टिकली अपने आत्म-कल्याण और आत्म-परिवर्तन के लिए जागृत हो जाए। परमात्मा आए हैं सभी का, सभी माना सभी का कल्याण करने। कोई भी संसार में भ्रम में नहीं चलना कि “हमें तो परमात्मा निराकार रूप में मिल गया है, हमारा तो सब कुछ पार हो जाएगा।” कदापि नहीं। इस भ्रम के मायाजाल से सभी के सभी अस्तित्व बाहर आना।

आप, आप आत्मा को आपके परिवर्तन के लिए परमात्मा के पास पहुंचना होगा। एक-एक श्रीमत पर चलना होगा। उससे आपके अंदर की एक-एक माया मुक्त होती जाएगी। उससे आपके अंदर परिवर्तन की शक्ति बढ़ती जाएगी। परमात्मा की श्रीमत से, परमात्मा की शिक्षा से आप आत्मा, आपका सूक्ष्म शरीर, आपके स्थूल शरीर — इन सभी से आपके मायावी अस्तित्व मुक्त होते जाएंगे। आपके सभी पुराने संस्कार समाप्त होते जाएंगे। परमात्मा का एक-एक ज्ञान का महावाक्य, परमात्मा की एक-एक कर्मों की शिक्षा, परमात्मा की एक-एक आज्ञा — आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल और आत्मा, हर प्रकार से परिवर्तित होती है। परमात्मा की आज्ञा से आप आत्मा के अंदर, आप आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों को आज्ञा देने के पात्र बनते हो। जब आप आत्मा परमात्मा के पास पहुंचकर परमात्मा की श्रीमत पर चलते जाते हो, आपका एक-एक सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां, स्थूल कर्मेन्द्रियां, आप आत्मा के सभी गुण-शक्तियां श्रीमत अनुसार चलना शुरू हो जाते हैं। यह है परमात्मा के श्रीमत की ताकत, परमात्मा की हर शिक्षा की ताकत। परमात्मा ने कहा — “आज से ऐसे बैठो।” उस एक बैठने की शिक्षा से आप नहीं जानते कितने तो जन्मों के आपके कौन-कौन से संस्कार — जो विपरीत संस्कार हैं, पुराने संस्कार हैं — वह मिटते जाते हैं और आपके अंदर नए संस्कार धारण हो जाते हैं, श्रीमत वाले। इसलिए घर पर बैठकर यह यात्रा नहीं हो सकती।

सभी आत्माएं अपने आप सच्ची दिल से पूछना — क्या संसार में चलते रहने से हम आत्मा का संपूर्ण परिवर्तन होना मुमकिन है? मुझ आत्मा की कल्याण की यात्रा होना पॉसिबल है? हर कोई आत्मा अपने से आज अवश्य यह सवाल पूछे। अनंत जन्म, अनंत कल्प, उसके अनंत जन्मों में आप सभी

आत्माओं ने संसार ही किया है। हर जन्म के आपके साथी-सहयोगी अलग-अलग थे। तो इस जन्म में आप आपके जो देह के संबंधी हैं, उनमें क्यों अटक रहे हो? इतने जन्म अटके, संसार किया। क्या इस संगम युग में आपको जागना नहीं है? आपको आपका कल्याण करना नहीं है?

जब तक आत्माएं परमात्मा के पास समर्पित नहीं हो जातीं, तब तक उनका कल्याण नहीं होगा। कल्याण बहुत अलग बात है। कल्याण माना आत्मा ही पूर्ण रूप से नई बन जाती है — संपूर्ण परिवर्तन, संपूर्ण नई। इसलिए सभी आत्माएं आज अवश्य थोड़ा समय निकाल के विचार करना — “क्या संसार में ऐसे ही चलते रहने से हमारा कल्याण और परिवर्तन हो पाएगा?” हर कोई सच्ची दिल से चेक करना अपना-अपना जवाब।

बाकी सारी बातें तो स्पष्ट रूप से आप सबके सामने रखी ही हैं। अभी हर किसी का अपना निर्णय है। कल्याण और परिवर्तन, परमात्मा के पास ही पहुंचकर होना निश्चित है। उसकी श्रीमत पर चलकर, उसकी आज्ञाओं को पालन कर कर, उसके हर शिक्षा को धारण कर कर कल्याण की यात्रा पूरी हो पाएगी।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः